अध्याय - 3
प्रजातंत्र के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

हम पढ़ेंगे

14.1 जनसंख्या विस्फोट
14.2 बेरोजगारी
14.3 साम्प्रदायिकता
14.4 आतंकवाद
14.5 मादक पदार्थों का सेवन
14.6 प्रजातन्त्र की सफलता में बाधक तत्व
14.7 प्रजातन्त्र की बाधाओं को दूर करने के उपाय

हमने स्वतंत्रता प्राप्ति और उसके बाद के छः दशकों में सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक क्षेत्र में विकास संबंधी बहुत कार्य किए, परन्तु फिर भी हम विकास की गति को तीव्र नहीं कर पाए, क्योंकि हमारे मार्ग में अनेक चुनौतियाँ हैं। साम्प्रदायिकता, जातिवाद, क्षेत्रवाद, आतंकवाद, गरीबी, बेरोजगारी जैसी समस्याओं के कारण हम विकास कार्य में खर्च होने वाली राशि को पूरा-पूरा विकास कार्यों पर खर्च नहीं कर पा रहे हैं। ये समस्याएँ परस्पर अविश्वास और मतभेदों को बढ़ा रही हैं। इनसे सामाजिक शान्ति व्यवस्था भंग होती है। प्राचीन काल की सामाजिक मान्यताएँ, परम्पराएँ, अंधविश्वास जो कि आज के समय के अनुकूल नहीं हैं, आज भी समाज में व्याप्त हैं। आतंकवादी हिंसा कभी कभी गंभीर रूप ले लेती है। इन सभी चुनौतियों पर हमें विचार कर इनसे बचने का प्रयत्न करना है।

14.1 जनसंख्या विस्फोट

जब जनसंख्या वृद्धि दर इतनी तेज हो जाती है कि देश में उपलब्ध संसाधन आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते तब इस स्थिति को 'जनसंख्या विस्फोट' कहा जाता हैं। जनसंख्या की तीव्र गति से वृद्धि हमारे आर्थिक विकास के सारे प्रयासों को विफल कर देती हैं।

भारत का क्षेत्रफल विश्व में कुल क्षेत्रफल का 2.4 प्रतिशत हैं जबकि हमारे देश की जनसंख्या विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 16.7 प्रतिशत है जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में भारत का दूसरा स्थान है जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवां स्थान है। हमारे देश में आज जनसंख्या विस्फोट के कारण वस्त्र, आवास और भोजन की समस्या विकराल रूप धारण कर चुकी है।

1901 की जनगणना के अनुसार देश की जनसंख्या 23.8 करोड़ थी।
2011 की जनगणना के अनुसार यह बढ़कर 121.6 करोड़ हो गई है।

स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और शिक्षा के प्रसार के कारण हमारे देश में मृत्यु दर तेजी से कम हो रही है यद्धपि जन्म दर भी घट रही है परन्तु इसकी गति धीमी हैं। किसी भी देश के प्राकृतिक संसाधनों का विकास जनसंख्या पर निर्भर करता हैं। जनसंख्या में आवश्यक से अधिक वृद्धि अविकसित देशों के लिये अभिशाप हैं। जनसंख्या जिस गति से बढ़ती है उत्पादन में उतनी वृद्धि नहीं हो पाती है इसके परिणामस्वरूप प्रति व्यक्ति औसत आय कम हो जाती है व जीवन स्तर निम्न हो जाता है, कार्य कुशलता व कार्य क्षमता कम हो जाती है। हमारे देश में दो बच्चों के परिवार को आदर्श माना गया है जबकि हमारे पड़ौसी देश चीन में एक बच्चे के परिवार को आदर्श माना गया हैं। जनसंख्या जिस गति से बढ़ रही है उसके हिसाब से शीघ्र ही हमारे देश की जनसंख्या चीन से भी अधिक हो जावेगी।

जनसंख्या विस्फोट के कारण – जनसंख्या में अधिक वृद्धि के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं –

- **सामाजिक कारण –**
  1. संयुक्त परिवार प्रथा होने से अधिक बच्चों के पालन पोषण में सामान्यत: परेशानी न होना।
  2. कम आयु में विवाह होने से बच्चे अधिक पैदा होना।
  3. भारतीय समाज का परम्परावादी होना एवं लड़कों के जन्म को महत्वपूर्ण माना जाना।
  4. स्त्रियों की सामाजिक स्थिति का कमजोर होना।
  5. बच्चों के जन्म को ईश्वर की देन मानना।
- **आर्थिक कारण –**
  1. निर्धनता के कारण अधिक बच्चों को कमाई का साधन माना जाता है।
  2. कृषि पर निर्भरता – कृषि कार्य में लगे परिवारों के बच्चे उनके कृषि सम्बन्धी कार्यों में सहायता करते हैं। पशु चराने में खेतों की रखवाली करने में अधिक बच्चे उपयोगी होते हैं।
  3. दोषपूर्ण आर्थिक दृष्टिकोण – ग्रामीण जनता की यह धारणा होती है कि आने वाला बच्चा अपने साथ दो हाथ–पैर भी लाता है और उनके काम में सहायक होता है। इसीलिए वे बच्चों को वरदान मानते हैं।
- **अन्य कारण –**
  1. शिक्षा का आभाव – अशिक्षित जनता अधिक जनसंख्या की हानियों को नहीं समझ पाती हैं। इस कारण वे इस ओर ध्यान नहीं देते।
  2. उष्ण जलवायु – भारत की जलवायु गर्म है। यहां लड़कियों में परिपक्वता जल्दी आ जाती है, कम उम्र में शादी होनें से अधिक बच्चे हो जाते हैं।
  3. संतान निरोधक विधियों की कमी है। अज्ञानता और अनुपलब्धता के कारण इन विधियों का प्रयोग कम हो रहा है।
  4. घटती मृत्यु दर– भारत में मृत्यु दर तेजी से घट रही हैं इस कारण जनसंख्या कम नहीं हो पा रही है।

जनसंख्या विस्फोट का प्रभाव

- प्रति व्यक्ति आय में गिरावट आती है।
- बचत और विनियोग बहुत कम हो पाता है।
- भूमि पर जनसंख्या का अधिक भार पड़ रहा हैं। कृषि योग्य भूमि आवश्यक मात्रा में अनाज उत्पन्न नहीं कर पा रही है।
- खाद्यान्न की कमी – खाद्यान्न का उत्पादन सीमित और जनसंख्या में वृद्धि खाद्यान्न की कमी समस्या पैदा करता है।
- जनसंख्या वृद्धि के कारण आवास और शिक्षा की समस्या उत्पन्न हो रही है। रहने के लिये आवास क्षेत्र बढ़ता है परिणामस्वरुप कृषि व अन्य उपयोग हेतु भूमि कम हो रही है।
- स्वास्थ्य सेवाओं की आवश्यक मात्रा में पूर्ति नहीं हो पा रही है।
- जनसंख्या वृद्धि से मांग बढ़ रही है वस्तुएँ कम मात्रा में उपलब्ध हो पा रही है इससे कीमतें बढ़ रही हैं।
- बेरोजगारी में वृद्धि– जनसंख्या वृद्धि से श्रम की पूर्ति बढ़ जाती है, इससे बेरोजगारी की संख्या बढ़ जाती है।
- ऊर्जा का उपयोग बढ़ जाता हैं। अधिक बिजली की जरुरत होती है इससे अधिक बिजलीघरों के निर्माण की आवश्यकता महसूस होती है।

उपरोक्त परिणाम हमारे विकास प्रक्रिया के मार्ग में बाधा पहुँचाते है अत: इन्हें दूर करने के प्रयास करना होंगे। तभी जनसंख्या विस्फोट की समस्या से निपटा जा सकेगा।

जनसंख्या विस्फोट के समाधान के उपाय

भारत में जनसंख्या की वृद्धि दर को कम करने का एकमात्र उपाय जन्म दर को घटाना हैं। हमारे देश में जनसंख्या को कम और नियन्त्रित करने के लिए जनसंख्या नीति अपनाई गई है इस दिशा में सरकार ने आवश्यक कदम उठाये है जो निम्नलिखित हैं –

1. परिवार नियोजन कार्यक्रम को लागू किया गया है इसे बढ़ावा देने हेतु निरन्तर इसका प्रचार किया जा रहा हैं।
2. शहर व गावों में परिवार नियोजन केन्द्र स्थापित किये गए हैं।
3. विवाह की आयु बढ़ा दी गई है।
4. परिवार नियोजन कार्यक्रमों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। प्रशिक्षण द्वारा उनको अधिक प्रभावशाली बनाया जा रहा है।
5. दो बच्चों के मानक को प्रोत्साहित किया जा रहा है।
6. बुनियादी प्रजनन सुविधाओं पर ध्यान दिया जा रहा है।
7. टीकाकरण का प्रचार–प्रसार हो रहा है।
8. स्त्री शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।
9. सामाजिक संस्थाओं को परिवार नियोजन कार्यक्रम से जोड़ा गया है।

सरकार द्वारा परिवार नियोजन कार्यक्रमों को लगातार प्रोत्साहित करने के बाद भी उसका वांछित प्रभाव नहीं हुआ है अत: राष्ट्रीय मुद्दा मानकर उसे जनता के समक्ष रखा जाने हेतु हमें जनजागृति लानी होगी।

14.2 बेरोजगारी

बेरोजगारी से आशय एक ऐसी स्थिति से हें जिसमें व्यक्ति वर्तमान मजदूरी की दर पर काम करने को तैयार होता है परन्तु उसे काम नहीं मिलता। बेरोजगारी की स्थिति में श्रम शक्ति और रोजगार के अवसरों की असमानता बढ़ती जाती है। इससे श्रमिकों की मांग की अपेक्षा पूर्ति अधिक होती है। ऐसी स्थिति में बहुत से व्यक्ति काम करने योग्य तो हैं परन्तु उन्हें काम नहीं मिल रहा है। इसे ही बेरोजगारी कहते हैं।

भारत में बेरोजगारी दो प्रकार की होती है –

1. शहरी बेरोजगारी
2. ग्रामीण बेराजगारी

1. शहरी बेरोजगारी – बड़ी संख्या में शिक्षा प्राप्त कर लोग बेकार बैठे रहते हैं। इससे शिक्षित बेरोजगारों की संख्या बढ़ रही है। ग्रामीण क्षेत्रों से जनसंख्या शहरों की ओर जा रही हैं। मशीनीकरण व आधुनिकीकरण के कारण अवसरों की संख्या कम है, इससे औद्योगिक श्रमिकों में निरन्तर बेरोजगारी बढ़ रही है।

2. ग्रामीण बेराजगारी – कृषि क्षेत्र में वर्ष भर कार्य नहीं रहता। छ: माह कृषक बेकार रहते हैं। पूंजी का आभाव होने के कारण कुटीर उद्योगों का विकास नहीं हो पाया है। उन्हें वर्ष भर कार्य नहीं मिल पाता और उनकी कमाई में बढ़ोत्तरी नहीं हो पाती।

भारत में बेरोजगारी की स्थिति बहुत अधिक विकराल हैं। बेरोजगारों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। भारत में बेरोजगारी के लिये निम्न कारण पूर्णरूप से उत्तरदायी है –

भारत में बेरोजगारी के कारण

- **जनसंख्या में तीव्र वृद्धि** – काम करने वालों की संख्या तो बढ़ रही है परन्तु तुलनात्मक रूप में कार्य के अवसर नहीं बढ़ पा रहे हैं।

- **कृषि पर बढ़ता दबाव** – जनसंख्या वृद्धि से कृषि भूमि पर जनभार बढ़ा हैं। इसके कारण उपलब्ध भूमि पर छिपी हुई बेरोजगारी में वृद्धि हुई है। फलतः परिवार का जीवन स्तर कम हुआ है और प्रति व्यक्ति आय कम हुई है।

- **दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली** – शिक्षा प्रणाली पर्याप्त व्यवसायिक नहीं हैं। इससे लाखों बी.ए., एम.ए. करने वाले लोग बेरोजगार रहते हैं।

- **दोषपूर्ण नियोजन** – हमारे देश में नियोजन नीति रोजगार मूलक नहीं है। रोजगार के अवसर अधिक उपलब्ध हो सकें इस पर ध्यान कम दिया गया है।

- **श्रमिकों में गतिशीलता का अभाव** – ग्रामीण जनता आज भी परम्परा, कुरीतियों व अंधविश्वासों में जकड़ी हुई है। इसके कारण उनकी गतिशीलता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, जहां रोजगार उपलब्ध है वे वहां भी नहीं पहुंच पाते।

- **विकास की धीमी गति** – पंचवर्षीय योजनाओं में विकास की दर लक्ष्य से नीची रही है इससे रोजगार के अवसरों में अधिक वृद्धि नहीं हो पाई।

- **पूंजी का आभाव** – कृषकों की आय कम होने से बचत नहीं हो पाती। इससे पूंजी विनियोग नहीं हो पाता और रोजगार के अवसर कम हो जाते है।

- **उद्योगों में मशीनीकरण** – उद्योगों में उच्च तकनीकी मशीनों का उपयोग होने से मानव श्रम की आवश्यकता कम होती है इससे बेरोजगारी बढ़ती है।

- **शिक्षितों का दोषपूर्ण दृष्टिकोण** – देश में शिक्षितों की श्रम कार्य में रूचि नहीं होती। वे शारीरिक श्रम करने की अपेक्षा बेकार रहना पसन्द करते हैं।

- **रोजगार मार्गदर्शन का अभाव** – देश में रोजगार के इच्छुक व्यक्तियों को सूचना न मिलने से अवसरों की जानकारी नहीं होती। उन्हें सही मार्गदर्शन नहीं मिल पाता है।

उपरोक्त कारणों से बेरोजगारी बढ़ती जा रही है जिसके विपरीत परिणाम हमारे देश में देखने में आ रहे है बेरोजगारी के निम्नलिखित परिणाम होते है –

बेरोजगारी के परिणाम

- **मानव शक्ति का अपव्यय** – कार्य करने योग्य व्यक्ति जब बेकार रहते हैं तो उनका श्रम व्यर्थ जाता हैं। इस तरह से बहुत से बेरोजगारों की श्रमशक्ति का उपयोग नहीं हो पाता।

- **आर्थिक विकास में बाधा** – कृषि में निहित बेरोजगारी और अन्य बेरोजगारी से बचत शून्य हो जाती है। क्योंकि आय कम हो जाती है। पूंजी का निर्माण और विनियोग नहीं हो पाता। इससे देश के आर्थिक विकास में रूकावट आती है।

- **संसाधनों की बर्बादी** – देश में सरकार स्वास्थ्य और शिक्षा के लिये बहुत बड़ी धनराशि खर्च करती हैं। प्रशिक्षण पर भी खर्च होता है परन्तु बेरोजगारी के कारण ये सब व्यर्थ हो जाता हैं।

- **सामाजिक समस्याएँ** – बेरोजगारी मानसिक और सामाजिक असंतोष को जन्म देती है। बेरोजगार असंतुष्ट और परेशान व अभाव ग्रस्त रहते हैं इससे चोरी, डकैती बेईमानी, शराबखोरी, नशा, आदि बुराइयां समाज

में बढ़ जाती हैं। सुरक्षा व्यवस्था नष्ट होती है। नागरिकों में असुरक्षा की भावना बढ़ जाती है। सरकार को इस हेतु बड़ी राशि खर्च करनी पड़ती है।

- **राजनीतिक अस्थिरता** – बेरोजगारी के कारण एक बड़ा जन समूह सरकार के विरूद्ध हो जाता है। उनमें असंतोष और आक्रोश उत्पन्न हो जाता है। ये स्थिति राजनैतिक अस्थिरता को जन्म देती है। सरकार पर सदा संकट बना रहता है।

बेरोजगारी को दूर करने के उपाय

- **जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण** – जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण करना चाहिये इससे श्रमिकों की पूर्ति दर में कमी आएगी। रोजगार के अवसर बढ़ाने के साथ यह भी अति आवश्यक है।

- **लघु और कुटीर उद्योगों का विकास** – ये उद्योग ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्थापित हैं तथा अंश कालीन रोजगार प्रदान करते हैं। इसमें पूंजी कम लगती है और ये परिवार के सदस्यों द्वारा ही संचालित होते हैं। इसके द्वारा बेकार बैठे किसान और उनके घर के सदस्य अपनी क्षमता, श्रम, कला कौशल और छोटी-छोटी जमा राशि का उपयोग कर अधिक आय और रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। अत: सरकार को इनके विकास के लिये पूंजी उपलब्ध करानी चाहिये।

- **व्यवसायिक शिक्षा** – देश की शिक्षा पद्धति में समयानुसार परिवर्तन की आवश्यकता होती हैं। हमें शिक्षा को रोजगार उन्मुख बनाना है। हाईस्कूल पास करने के बाद छात्रों का उनकी रूचि के अनुसार व्यवसायिक शिक्षा चुनने के लिये जोर देना चाहिये। इससे शिक्षा प्राप्त करने के बाद के व्यवसाय से जुड़ सकेंगे और देश में बेरोजगारी की समस्या हल हो सकेगी।

- **विनियोग में वृद्धि** – सार्वजनिक क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर पूंजी का विनियोग कर बेरोजगारी दूर की जा सकती है। निजी क्षेत्र में बड़े उद्योगों को प्रोत्साहन देना चाहिए जो कि श्रम प्रधान हों। इससे लोगों को रोजगार मिलेगा। बड़े-बड़े उद्योगों में पूंजी गहन तकनीक पर नियन्त्रण रखना चाहिये। क्योंकि इनमें बड़ी-बड़ी मशीनों का उपयोग किया जाता है और मानव श्रम कम लगता है। इससे बेरोजगारी बढ़ती है।

- **सहायक उद्योगों का विकास** – ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के सहायक उद्योग जैसे दुग्ध व्यवसाय, मछली पालन, मुर्गीपालन, बागवानी, फूलों की खेती आदि का विकास करना चाहिये।

- **प्रशिक्षण सुविधाएँ** – अकुशल श्रमिकों को प्रशिक्षण देने के लिये जगह-जगह प्रशिक्षण केन्द्र खोलना चाहिये। इससे उत्पादन में वृद्धि होगी और बेरोजगारी कम होगी। श्रमिकों की मांग और पूर्ति के अनुसार प्रशिक्षण आयोजित होने चाहिये। श्रम को गतिशीलता प्रदान करना चाहिये जिससे वे दूसरे स्थान पर जाकर नौकरी प्राप्त कर सकें।

- **ग्रामीण रोजगार योजनाओं का विस्तार** – गावों में चलने वाली विकास योजनाओं का विस्तार किया जाना चाहिये। कृषि सेवा केन्द्र खोलना चाहिये। स्वरोजगार योजना, जवाहर रोजगार योजना, समृद्धि योजना आदि का विस्तार किया जाना चाहिये। शहरों में प्रधानमन्त्री रोजगार योजना, रोजगार गारण्टी स्कीम आदि का अधिक विस्तार करना चाहिये।

- **कृषि उन्नति** – कृषि में विभिन्न नये कार्यक्रम लागू करना चाहिये। बहुफसल योजना, उन्नत बीज, उर्वरक, कृषि यन्त्रों का उपयोग नई तकनीकों का प्रयोग किया जाना चाहिये। कृषि हेतु समय पर ऋण उपलब्ध कराना चाहिये। सिंचाई योजनाओं का विस्तार होना चाहिये। इससे कृषि आय बढ़ेगी और रोजगार प्राप्त हो सकेंगे। कृषि उद्योग हेतु छोटी बचत की जा सकेगी।

उपरोक्त साधनों के अनुकरण से बेरोजगारी की समस्या के निराकरण में सकारात्मक योगदान होने की सम्भावना की जा सकती है।

14.3 साम्प्रदायिकता

भारत एक पंथनिरपेक्ष राज्य है इसमें विभिन्न जाति, धर्म, संप्रदाय को मानने वाले निवास करते हैं। अपने पंथ के प्रति निष्ठा रखकर दूसरे पंथों एवं सम्प्रदायों को घृणा की दृष्टि से देखना तथा व्यापक राष्ट्र हित की उपेक्षा कर स्वयं के पंथ अथवा संम्प्रदाय के हितों की पूर्ति में कार्य करना सांप्रदायिकता कहलाती है। सांप्रदायिकता लोकतन्त्र एवं राष्ट्रीय एकता के मार्ग में एक बड़ी बाधा है। इसके कारण द्वेषभाव, हिंसा और पारम्परिक अविश्वास का वातावरण निर्मित हो जाता है।

साम्प्रदायिकता का अर्थ

राष्ट्र हित को भुलाकर एक पंथ अथवा एक संप्रदाय विशेष के प्रति निष्ठा रखकर उसके विस्तार के लिये ही सोचना और कार्य करना तथा दूसरे पंथ एवं सम्प्रदायों के प्रति घृणा भावना रख उन्हें हानि पहुंचाना साम्प्रदायिकता हैं।

स्वतन्त्रता के पूर्व हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी ने एकजुट होकर स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी और सफल रहें। अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज्य करो' की नीति ने इनमें आपसी द्वेष भर दिया। देश का धर्म के आधार पर दो भागों में बटवारा हो गया। आपसी अविश्वास बढ़ गया जो कि साम्प्रदायिकता के रूप में आज भी विद्यमान है।

हमारे देश में सभी पंथ और संप्रदायों का अस्तित्व रहा है। सभी धर्मों का देश के विकास में सहयोग रहा है। ताजमहल, फतेहपुर सीकरी, लाल किला, मीनाक्षी मन्दिर, खजुराहो, कोणार्क का सूर्य मन्दिर, विवेकानन्द स्मारक, सांची के स्तूप जैसी अनुपम कलाकृतियां सभी धर्मों की देन हैं जिस पर हम सब भारतवासियों को गर्व हैं।

साम्प्रदायिकता मानवता और राष्ट्रीय एकता के लिये गम्भीर अभिशाप है।

साम्प्रदायिकता के कारण

1. ब्रिटिश सरकार की देश को विभाजित करने की नीति ने साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया है। परिणामत: देश में वर्षों से साथ रह रहे विभिन्न सम्प्रदायों के लोगों में अविश्वास की भावना बढ़ गई है।
2. राजनीतिज्ञों, नेताओं और सरकारों द्वारा राजनीतिक स्वार्थ के तहत चुनाव जीतने के लिये धर्मों एवं सम्प्रदायों की मागों को मान लिया जाता हैं और उन्हें खुश करने के प्रयत्न किए जाते हैं।
3. कुछ धार्मिक नेता अपने निजी स्वार्थों के लिये विभिन्न सम्प्रदायों में फैली अशिक्षा, बेरोजगारी, में सुधार के लिये कार्य नहीं करते। अपने अनुयायियों को धार्मिक शिक्षा के लिये ही प्रेरित करते हैं। इससे वे सही गलत नहीं समझ पाते हैं।
4. भारत में होने वाली हर छोटी घटना को कुछ देश तूल देकर प्रचारित व प्रसारित करते हैं। इससे देश में साम्प्रदायिकता की भावना को बढ़ावा मिलता है।
5. सरकार का घटनाओं के प्रति उदासीन रवैया भी इसे बढ़ाता है। घटनाओं के समय सही निर्णय अगर तत्काल ले लिया जाये तो उन्हें दंगों का रूप लेने से रोका जा सकता है।
6. विभिन्न सम्प्रदायों में निहित पृथक्करण की भावना भी साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देती है।

परिणामत : साम्प्रदायिकता से बहुत हानियां होती है। दंगों में जन व धन की हानि होती है। सम्पत्ति नष्ट हो जाती है, वाहन जल जाते हैं, सरकार को करोड़ों का नुकसान हो जाता है, राजनीतिक अस्थिरता बनी रहती है।

मतदान व चुनाव में साम्प्रदायिकता का प्रभाव होता है। लोग अपने सम्प्रदाय के उम्मीदवार को ही मत देते हैं चाहे वे अयोग्य ही क्यों न हों। राष्ट्रीय एकता और अखंडता में बाधा आती है। आर्थिक और औद्योगिक विकास की गति धीमी हो जाती है देश की सुरक्षा को खतरा हो जाता है क्योंकि झगड़ों और दंगों में सेना लगानी पड़ती है जबकि उसकी आवश्यकता सीमा के लिये अधिक जरुरी है।

साम्प्रदायिकता को दूर करने के उपाय

1. सर्व धर्म प्रार्थना सभाएं – सरकार को सभी धर्मों की मिली जुली प्रार्थना सभाओं की आयोजन करना चाहिये।
2. शिक्षा में प्रारम्भ से ही नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को जोड़ना चाहिये।
3. सरकार को कानून बनाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि वे समान रूप से सभी नागरिकों पर लागू हों। इन्हें लागू करने में किसी भी प्रकार का भेदभाव जाति, धर्म, भाषा और लिंग के आधार पर नहीं करना चाहिये।
4. चुनाव के समय धर्म के आधार पर उम्मीदवार का चुनाव नहीं करना चाहिये। राजनीति में धर्म का प्रभाव बढ़ने से धर्मनिरपेक्षता की भावना में बाधा होती है। नेताओं को राष्ट्र हित को ध्यान में रखना चाहिये ना कि समुदाय के हितों को।
5. शिक्षा का विकास अधिक से अधिक करना चाहिये। इससे व्यक्ति अच्छे या बुरे का निर्णय स्वयं ले सकता है। अशिक्षित धर्मांध जल्दी हो जाते हैं।
6. सरकार को कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिये जो कि साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देता हो।

हमें समुदाय के सीमित और राष्ट्र के विस्तृत हितों के बीच संतुलन स्थापित करना होगा तब ही हम साम्प्रदायिकता की भावना से बच सकेंगे और देश भक्ति की भावना को बढ़ा सकेंगे।

14.4 आतंकवाद

मानव जाति के विरूद्ध कुछ व्यक्तियों या गिरोहों की हिंसा को आतंकवाद कहते हैं। यह लोकतन्त्र के विरूद्ध अपराध हैं। आतंकवाद आज विश्वव्यापी समस्या बन गया है। आतंकवादी विश्व भर में आतंकी गतिविधियां अपनाकर सबकों भयभीत और असुरक्षित करना चाहते हैं। ये अनैतिक साधनों को भी न्याय संगत ठहराते हैं। हिंसक गतिविधियों द्वारा देश की अखण्डता और एकता को नष्ट करना चाहते हैं। कुछ विदेशी ताकतें, कट्टरपंथी ताकतें और अलगाववादी प्रवृत्तियां आतंकवाद को प्रोत्साहन दे रही हैं। ये विश्व में शान्ति भंग कर भयभीत करना चाहती है। आतंकियों द्वारा अतिविकसित देश अमेरिका की वर्ल्डट्रेड सेंटर जैसी इमारत को ध्वस्त कर दिया गया। सारा संसार इससे स्तब्ध रह गया। हजारों जानें गईं। अपार धन की हानि हुई और असुरक्षा की भावना बढ़ गई। आतंकवादियों द्वारा अक्सर बम विस्फोट जैसे कार्य किये जाते हैं। ये राज्य और समाज को बांटने का कार्य करते है। भारत में आतंकवाद हमें तीन रूपों में दिखाई देता है –

1. **साम्प्रदायिक आतंकवाद** – जम्मू कश्मीर में चल रहा आतंकवाद इसका उदाहरण है। कश्मीर घाटी में धर्म के नाम पर हत्या, अपहरण, लूटपाट करना और शान्ति व्यवस्था भंग करना इनका उद्देश्य है। कश्मीर में सीमापार से आ रहे आतंकवादी धर्म के नाम पर आतंक फैला रहे हैं। वर्ग विशेष की सम्पत्ति को लूटकर उन्हें घर छोड़ने पर मजबूर कर दिया है। कश्मीर में इनकी आतंकी गतिविधियां निरन्तर चल रही हैं। इसके कारण भारत और पाकिस्तान में 3 युद्ध भी हो चुके हैं।
2. **नक्सली आतंकवाद** – भारत में नक्सलियों की गतिविधियां शान्ति और व्यवस्था भंग कर रही है।

इनका उपद्रव पश्चिम बंगाल के एक गांव नक्सलीवाड़ी से हुआ है इस कारण इसे नक्सलवाद कहा गया। ये हत्या, अपहरण, वसूली, लूटपात के माध्यम से आतंक फैलाते हैं। आन्ध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, प. बंगाल आदि प्रदेशों में इसका फैलाव हो रहा हैं ये मार्क्स और माओं की विचारधारा के अनुयायी है।

3. **जातीय आतंकवाद** – उत्तर पूर्वी राज्यों में जन जातियों और गैर जनजातियों के आपसी मतभेद प्रजातीय आतंकवाद के रूप में उभरकर आये है ये जातियाँ आपस में निरन्तर लड़ती रहती हैं। वे देश की एकता और अखण्डता को खतरा उत्पन्न कर रही हैं।

आतंकवाद का प्रभाव व परिणाम

- नागरिकों में असुरक्षा की भावना पैदा हो जाती है।
- आर्थिक विकास के मार्ग में बाधा आती है। जिस गति से विकास कार्य करने है उन्हें छोड़कर बचाव कार्य करने होते हैं। इससे शासकीय योजनाएं प्रभावित होती हैं।
- जन धन की बहुत हानि होती है। निरपराध लोग मारे जाते हैं। सरकारी और निजी सम्पति को नुकसान पहुंचता है।
- आतंकवाद से अघोषित युद्ध जैसी स्थिति बन जाती है। कुछ देश आतंकवाद को कूटनीतिक साधन के रूप में उपयोग करते हैं।

आतंकवाद के कारण

1. **उपनिवेशवाद** – शासकों द्वारा वर्षों तक अपनाई गई दमनकारी नीतियां उपनिवेश में नागरिकों के विद्रोह का कारण होती हैं। वे शासकों से छुटकारा पाने के लिये आतंकी गतिविधियाँ अपनाते हैं।

2. **सूचना प्रौद्योगिकी** – पिछले दो दशकों में संचार साधनों में बहुत क्रांति आई है टेलीविजन, इन्टरनेट, मोबाइल, फेक्स आदि के माध्यम से आतंकवादी संगठन इसका प्रयोग कर अपनी आतंकी गतिविधियां करने में अधिक सफल होते है।

3. **राष्ट्रों में द्वेष की भावना** – एक राष्ट्र द्वारा जब दूसरे राष्ट्र में आतंकवादी गतिविधियों के संचालन के लिए आतंकवादी संगठनों को संरक्षण, प्रशिक्षण एवं आर्थिक मदद दी जाती है तो ऐसी स्थिति में संचालित आतंकवाद सीमा पार संचालित आतंकवाद कहलाता है। भारत इससे प्रभावित है भारत के पड़ोसी राष्ट्रों में अनेकों आतंकवादी शिविर पल रहे हैं जो प्रशिक्षण देने का कार्य करते है और विश्व में आतंकवाद के प्रसार में मदद करते है।

विश्व के कुछ राष्ट्रों द्वारा अन्य राष्ट्रों के प्रति द्वेष, ईर्ष्या की भावना ने भी दूसरे राष्ट्रों में हिंसा फैलाकर उस राष्ट्र को नीचा दिखाने की प्रक्रिया ने भी आतंकवाद को जन्म दिया है।

आतंकवादियों द्वारा हत्या, अपहरण, विमान अपहरण आगजनी, रायफल, हथगोले, मानव बम, जैविक हथियार रासायनिक हथियारों का उपयोग आतंकवादी गतिविधियों के लिये किया जाता है।

आज आतंकवाद एक विश्वव्यापी समस्या के रूप में खड़ा है। यह देशों की भौगोलिक सीमाओं को लांघ चुका है। इसके लिये सभी राष्ट्रों को मिलकर समाधान खोजना चाहिये। भारत सरकार को कश्मीरी आतंकवाद से निपटने के लिये कड़ा रूख अपनाना चाहिये। एवं सम्पूर्ण देशवासियों को एकजुट होकर आतंकवाद का सामना करना चाहिये।

14.5 मादक पदार्थों का सेवन

ऐसे पदार्थ जिनके सेवन से मस्तिष्क शिथिल हो जाये, रक्त का संचार तेज हो और उत्तेजना से क्षणिक

आनन्द की अनुभूति हो उसे मादक पदार्थ कहते हैं। नशीले पदार्थो के सेवन से मनुष्य स्वयं पर नियन्त्रण नहीं रख पाता है, उसका मस्तिष्क शिथिल हो जाता है तथा असर खत्म होने पर शरीर शिथिल हो जाता है।

वर्तमान में मादक पदार्थों का सेवन अधिक मात्रा में किया जाने लगा है। यह चिन्ता का विषय है। मादक पदार्थो का उत्पादन विश्व के कुछ ही देशों में होता है पर उपयोग पूरे विश्व में होता है। ऊंची कीमत पर इनकी तस्करी होती है। शराब, सिगरेट, गांजा, भांग, अफीम, चरस, कोकीन, मारफीन, हेरोइन आदि मादक पदार्थ हैं।

मादक पदार्थों का प्रभाव

1. मादक पदार्थो के सेवन से व्यक्ति के स्वास्थ पर प्रतिकूल प्रभाव होता है। धीरे-धीरे शरीर शिथिल होने लगता है। अनेक रोग उसे घेर लेते है।
2. व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक कार्य क्षमता घट जाती हैं। ज्यादा कार्य करने की शक्ति नहीं रहती हैं।
3. आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है। परिवार पर होने वाला खर्च नशे की भेंट चढ़ जाता है। घरेलू झगड़े बढ़ जाते हैं। पारिवारिक कलह बढ़ने से बच्चों का विकास प्रभावित होता है।
4. सामाजिक प्रतिष्ठा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। नशेड़ी लोगों को समाज में अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता। पूरे परिवार को इसे सहना पड़ता है। समाज पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है परिवार अपमानित होता है।
5. इन पदार्थो के सेवन से दुर्घटनाएँ, झगड़े, व्यभिचार, चोरी आदि की घटनाएँ बढ़ते लगती है। समाज और देश में अशान्ति की स्थिति पैदा हो जाती है व कानून व्यवस्था बिगड़ती है।
6. मादक पदार्थो की तस्करी का धंधा बढ़ जाता है। इससे शासन को मुश्किल होती है।

मादक पदार्थों के सेवन के कारण

1. नशे के बाद की पीड़ा दायक स्थिति से छुटकारा पाने के लिये व्यक्ति बार-बार नशा करता है। ड्रग्स लेते रहने पर यह स्थिति अधिक विकट होती जाती हैं, इस कारण मादक पदार्थो का सेवन बढ़ता ही जाता है।

2. मानसिक परेशानी दूर करने के लिये भी व्यक्ति मादक पदार्थो का सेवन करता है। आज जीवन में इतनी उलझने हैं कि व्यक्ति उनसे छुटकारा पाना चाहता है, दोस्तों के आग्रह पर भी व्यक्ति मादक पदार्थों का सेवन करने लगता हैं।

3. शराब पार्टियों के बढ़ते चलन और मीडिया द्वारा इनका प्रदर्शन, मयखानों में नृत्य, बार रूम का बढ़ता चलन, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव मादक पदार्थो के सेवन को बढ़ा रहा हैं।

4. फिल्मों में देखकर उनकी नकल कर युवा वर्ग आज शराब सिगरेट का उपयोग अधिक कर रहा है। होटलों की पार्टियों में लड़के और लड़कियाँ दोनों इनके प्रयोग के अभ्यस्त हो रहे हैं इससे उनकी सोच बदल रही है।

5. उच्च वर्ग के समकक्ष दिखने, उनके सम्पर्क में आने और व्यवसायिक पार्टियों के आयोजन में अब मादक पदार्थो की उपयोग अधिक हो रहा है।

मादक पदार्थों के सेवन पर रोक - मादक पदार्थों के सेवन पर रोक या कमी से व्यक्ति का शारीरिक और मानसिक सन्तुलन बना रहेगा। आर्थिक सम्पन्नता बढ़ेगी। परिवार में सुख शान्ति होगी। अपराध कम होंगे। कार्य कुशलता बढ़ने से देश के उत्पादन पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा और उसमें वृद्धि होगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। देश के विकास के लिये स्वस्थ्य नागरिक आवश्यक होते हैं। हमारी भावी पीढ़ी स्वस्थ्य और सम्पन्न होगी। प्रत्येक देश ने इन पदार्थो के सेवन पर रोक लगाने के लिये नीति और नियम बनाए है और उन्हें लागू किया

है। समाज में चेतना जगाने के लिये समाजिक संस्थाए निरन्तर कार्य कर रही है। हमारे देश में भी इस हेतु कार्य किये जा रहे हैं।

महात्मा गांधी द्वारा मद्यनिषेध का अभियान चलाया गया था। वर्तमान सरकारों ने भी इस नीति को लागू किया है, पर इसे अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं हुई है। उसके कुछ कारण निम्न हैं –

1. राज्य सरकार को आबकारी शुल्क के रूप में बड़ी राशि प्राप्त होती है।

2. नागरिकों में जागरूकता जगाने के प्रभावशाली उपायों की कमी होना। शराब या सिगरेट पीना हानिकारक है यह लिख देने मात्र से मादक पदार्थो का सेवन कम होगा यह सोचना गलत है। इसके लिये अधिक प्रभावशाली उपाय किये जाने चाहिये।

3. शराब के उपयोग को मीडिया द्वारा प्रदर्शित करने के कारण भी सरकारी और सामाजिक उपाय अधिक प्रभाव नहीं डाल पा रहे हैं।

मादक पदार्थो के सेवन से होने वाली हानियों को हमारी प्राथमिक शिक्षा से ही जोड़ दिया जाना चाहिये। इससे भावी नागरिकों को इनके सेवन से बचाया जा सकेगा। सरकार को इन पदार्थो की तस्करी रोकना चाहिये और अपराधियों को कड़ा दण्ड दिया जाना चाहिये। इन पदार्थों के बुरे प्रभाव से अवगत कराने के लिये समाज में चेतना जगाने की आवश्यकता है।

14.6 प्रजातंत्र की सफलता में बाधक तत्व

शासन की विभिन्न प्रणालियों में प्रजातंत्रिक प्रणाली को ही सर्वश्रेष्ठ प्रणाली माना जाता है। भारतीय प्रजातंत्र का ढांचा संविधान पर आधारित है और राजनीतिक दलों के सहयोग से यह व्यवस्था क्रियाशील है समय के साथ –साथ व्यवस्थाओं में कुछ खामियां आ जाती है जो वर्तमान व्यवस्था को चुनौती देती हैं भारतीय प्रजातन्त्र को भी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इन चुनौतियों के कारण देश की प्रजातांत्रिक व्यवस्था की पूर्ण सफलता में बाधा आती है।

1. गरीबी और बेरोजगारों की बढ़ती संख्या – देश की आबादी का करीबन 26 प्रतिशत भाग गरीबी रेखा के नीचे जीवननिर्वाह कर रहा है। देश में शिक्षित और अशिक्षित करोड़ों नागरिकों को नियमित रोजगार का कोई साधन नहीं है। नागरिकों के उसी बड़े वर्ग के कारण लोकतंत्र के संचालन में कठिनाई है। गरीबी ओर बेरोजगारी से प्रभावित नागरिक रूढ़िवादी अधिक रहता है और आधुनिक विचार और पद्धति के प्रति उसमें रूझान नहीं होता। गरीब एवं बेरोजगार व्यक्ति राष्ट्र के विकास एवं प्रगति में योगदान के बजाय अपने पेट भरने की जुगत में ज्यादा लगा रहता है।

प्रजातंत्र की सफलता में बाधक तत्व

- **गरीबी और बेरोजगारी की बढ़ती संख्या**
- **जातीयता, क्षेत्रीयता और भाषायी समस्याएँ**
- **निरक्षरता**
- **सामाजिक कुरीतियां**
- **संचार साधनों की नकारात्मक भूमिका**

2. जातीयता, क्षेत्रीयता और भाषायी समस्याएँ– हमारे देश में बिना किसी भेदभाव के सभी नागरिकों को स्वतंत्रता और समानता के अधिकार प्रदान किए गए है। किन्तु यथार्थ में देश में प्रचलित जातिवाद और क्षेत्रवाद, स्वतंत्रता और समानता के अधिकार को वास्तविक नहीं बनने दे रहे है। भारतीय प्रजातंत्र में विश्वास करने वाले यह मानते थे कि भारत में धीरे–धीरे जातिवाद स्वत: समाप्त हो जावेगा। लेकिन व्यक्ति जब जाति को प्राथमिकता देकर राजनीतिक कार्य और व्यवहार निर्धारित करता है तब लोकतंत्र के संचालन में अवरोध आना स्वाभाविक है।

जातिवाद की तरह ही क्षेत्रीयता और भाषागत समस्याएं है। व्यक्तियों के मन में अभी भी अपनी क्षेत्रीय

पहचान के प्रति आस्था है। नागरिक अपने कार्यों में कई बार क्षेत्रीयता के नाम पर काम करते है जिससे राज्य की निष्पक्षता प्रभावित होती है। प्रत्येक क्षेत्र के निवासी अपने क्षेत्र का विकास करना चाहते हैं। अंग्रेजों के भारत पर शासन के समय में शासकों ने अपने हितों के लिए कुछ खास क्षेत्रों का विकास किया था। यहाँ यातायात शिक्षा आदि के अच्छे साधन थे। इन क्षेत्रों का आर्थिक विकास भी ज्यादा हुआ। विकास में पिछड़ गए क्षेत्र अब यह प्रयत्न कर रहे हैं कि वे भी अपने क्षेत्रों का विकास कर सकें। क्षेत्रवाद की इन्हीं स्थितियों के फलस्वरूप क्षेत्रीय स्वतंत्रता यहाँ तक कि प्रांत विभाजन की मांग बढ़ती है। पृथक से बुन्देलखण्ड एवं बृजप्रदेश बनाए जाने की मांग भी समय समय पर उठी है। जब राष्ट्रीय हितों के ऊपर क्षेत्रीय भाव को रखा जाता हैं तब प्रजातांत्रिक मूल्य कमजोर होते हैं। कभी कभी यह भी कहा जाता है कि एक क्षेत्र विशेष केवल उसी क्षेत्र के निवासियों के लिए ही है। यह विचार अलोकतंत्रीय होने के साथ ही राष्ट्रीय एकता के विरूद्ध भी हैं।

क्षेत्रीयता की तरह ही भाषा की विविधता कई बार लोकतंत्र के लिए बाधक बनी है। भाषायी आधार पर राज्यों के पुनर्गठन के बाद भी हिन्दी के विरोध में दक्षिण भारत के कई राज्यों में आन्दोलन हुए। भाषा को राजनीति का विषय बनाकर जब जनता को उत्तेजित किया जाता है तो प्रजातंत्र के क्रियान्वयन में बाधा पैदा होती है। भाषा की राजनीति के कारण उत्तर-दक्षिण के मध्य कई बार संकुचित भावना पैदा हुई है।

3. निरक्षरता – लोकतांत्रिक पद्धति का सफल क्रियान्वन नागरिकों की शिक्षा पर निर्भर है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में साक्षरता का प्रतिशत 73 है जबकि महिला साक्षरता केवल 64.6 प्रतिशत है। स्त्री-पुरूषों के समान राजनीतिक अधिकार होते हुए भी शिक्षा की कमी के कारण लोकतंत्र के क्रियान्वयन में कठिनाई आती है। शिक्षा की कमी के कारण नागरिकों में राजनीतिक सक्रियता और सहभागिता की कमी रहती है। राजनैतिक जागरूकता की कमी लोकतंत्र के क्रियान्वयन ये बड़ा अवरोध है।

4. सामाजिक कुरीतियाँ – भारतीय समाज परम्परागत समाज है। यहाँ प्रजातंत्र की भावना के अनुकूल लोकमत की कम अभिव्यक्ति होती है। अभी भी हमारे समाज में अस्पृश्यता की भावना, महिलाओं के प्रति भेदभाव, जातीय श्रेष्ठता के भाव, सामन्तवादी मानसिकता, सामाजिक कुरीतियाँ व अन्धविश्वास आदि की भावना व्याप्त है। इस प्रकार के विचार लोकतंत्र को जीवन का अभिन्न अंग नहीं बनने दे रहे है।

6. संचार साधनों की भूमिका – प्रजातंत्र में संचार माध्यम एक सशक्त संवाहक की भूमिका का निर्वहन करते हैं। प्रजातंत्र के आधार स्तभों में प्रेस का स्थान महत्वपूर्ण है। आज प्रेस (समाचार पत्रों) से ज्यादा शक्तिशाली टी.व्ही. इंटरनेट आदि हो गए हैं। यह साधन जनता की मनोदशा और शासन एवं प्रशासन को प्रभावित करते हैं। नागरिकों को सरकार की कार्यवाहियों को जानने का अधिकार एक कानून बनाकर दिया जा चुका है। संचार साधनों से ही नागरिकों को यह जानकारी प्राप्त होती हैं कि सरकार उनके लिए क्या और किस तरह काम कर रही है।

संचार साधनों के माध्यम से सरकार और नागरिकों के मध्य एक घनिष्ठ नाता बनता है। प्रजातंत्र में सरकार द्वारा जनकल्याण की अनेक योजनाएं और कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। जनसंचार के साधनों द्वारा इनका प्रसार केवल व्यावसायिक आधार पर किया जाता है। शासन और प्रशासन की सकारात्मक भूमिका के प्रति इनमें आकर्षण कम है जबकि जनमत बनाना और जनमत को दिशा देने में यह साधन प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं भारत में इनकी भूमिका इतनी सकारात्मक नहीं है जितनी होना चाहिए।

14.7 प्रजातन्त्र की बाधाओं को दूर करने के उपाय

भारत के संविधान की प्रस्तावना में भारत की राज्य व्यवस्था के लिये उद्देश्य निर्धारित हैं। यह लक्ष्य या उद्देश्य हैं : लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक पंथनिरपेक्ष व्यवस्था, सभी नागरिकों के लिये स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व,

सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, व्यक्ति की गरिमा, राष्ट्र की एकता और अखण्डता को कायम रखना। स्वतंत्रता प्राप्ति की बाद से ही इन लक्ष्यों या उद्देश्यों के लिये शासन, प्रशासन और नागरिक निरन्तर कार्य कर रहे हैं, फिर भी इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में तथा भारतीय प्रजातन्त्र की सफलता में अनेक तत्व बाधक बने हुए हैं। बाधक तत्वों से शासन, प्रशासन, राजनीतिक दल और सभी नागरिकों को मिलकर सामना करने की आवश्यकता है।

गरीबी और बेरोजगारी की समस्या के समाधान के लिये शासन के साथ-साथ सामाजिक जागरूकता की भी आवश्यकता है। व्यक्ति और समाज को मिलकर शासन की योजनाओं का लाभ उठाना होगा। व्यावसायिक शिक्षा और स्वरोजगार के प्रयासों में और तेजी की आवश्यकता है।

शिक्षा के प्रति लोकचेतना को और अधिक विस्तार देने की आवश्यकता है। जातीय भावना या जातिवाद के विचार, क्षेत्रियता की भावना और भाषायी अवरोधों का संबंध नागरिकों की मानसिकता से है। इन विचारों में परिवर्तन के लिये कार्य किया जा सकता है। व्यक्ति को नैतिक शिक्षा के प्रति अधिक आग्रहशील होना चाहिये। हमें देश से निरक्षरता को दूर करने के लिये सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

देश में सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध कानून हैं किन्तु अनेक लोगों को इन कानूनों से भय नहीं है, सामाजिक कानूनों का पालन सुनिश्चित करने के प्रयास आवश्यक हैं, निर्वाचन प्रणाली में सुधार की भी आवश्यकता है अत: निर्वाचन सुधार की प्रक्रिया को गम्भीरता के साथ लागू करने की आवश्यकता है।

प्रजातन्त्र में भ्रष्टाचार को कम करने, समाप्त करने तथा अपराधों के नियंत्रित करने की अत्यन्त आवश्यकता है। अपराधियों को जल्दी सजायें दी जानी चाहिए। इसके लिए न्याय प्रणाली में सुधार किया जाना चाहिए। राजनीतिक दलों की संख्या को कानून बनाकर कम किया जाना चाहिए। राजनेताओं के लिए नैतिकता और नैतिक सिद्धांतों का प्रशिक्षण आयोजित होते रहना चाहिये। राजनीतिक दलों में सुधार के लिये नये कानूनों की आवश्यकता है। नवीन संचार साधनों की बढ़ती भूमिका के कारण उनके लिये दिशा निर्देश और कानूनों की आवश्यकता है।

भारत का जनमानस एक परमशक्ति में विश्वास करता है परन्तु साम्प्रदायिक नहीं है। अत: शिक्षित और जागरूक लोगों को साम्प्रदायिक विचारों और व्यक्तियों से बचाना होगा। साम्प्रदायिक और जातीय राजनीति का उद्देश्य नागरिकों में विभाजन की प्रवृत्ति उत्पन्न करना है इसे सभी को समझना आवश्यक है तभी हम समाधान पर पहुँच सकेंगे।

पक्ष और प्रतिपक्ष – संसद और विधान सभाओं में बहुमत प्राप्त दल सरकार का गठन करता है वह पक्ष कहलाता है। जो दल सत्ता पक्ष में नहीं होते वे सब मिलकर प्रतिपक्ष कहलाता है।

वैधानिक तरीके से विरोध – संसद और विधान सभा में प्रतिपक्ष द्वारा सरकार की नीतियों की आलोचना करना, निंदा प्रस्ताव रखना, काम रोको प्रस्ताव रखना तथा अविश्वास प्रस्ताव की प्रक्रियाएँ इत्यादि वैधानिक तरीके से विरोध कहलाता है।

विनियोग – किसी व्यवसाय में आय प्राप्त करने के लिये धन लगाना।

मद्य निषेध – नशीले पदार्थो का प्रयोग, उसके व्यापार और लाने ले जाने पर रोक

अभ्यास

सही विकल्प चुनिए -

1. जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में कौन-सा स्थान है -
   (i) तीसरा (ii) दूसरा
   (iii) सातवां (iv) पांचवा
2. आतंकवादी किन माध्यमों से अपनी गतिविधियाँ संचालित करते हैं -
   (i) शान्ति वार्ता (ii) शिक्षा
   (iii) राजनीति (iv) हत्या अपहरण
3. नशामुक्ति के लिये मद्यनिषेघ अभियान किसने चलाया था -
   (i) जवाहर लाल नेहरू (ii) महात्मा गांधी
   (iii) स्वामी विवेकानन्द (iv) लाल बहादुर शास्त्री
4. हाईस्कूल पास करने के बाद छात्रों की शिक्षा में बेरोजगारी दूर करने की दृष्टि से किस बात पर जोर देना चाहिए -
   (i) व्यवसायिक शिक्षा (ii) आध्यात्मिक शिक्षा
   (ग) राजनैतिक शिक्षा (iv) नैतिक शिक्षा

सही जोड़ी बनाइये -

1. विधानसभा	सर्वोच्च न्यायालय
2. संविधान की व्याख्या	केन्द्र सरकार
3. संघ सूची	राज्य विधान मण्डल
4. लोक सभा का सदस्य	राष्ट्रपति
5. अध्यादेश जारी करना	भारत का नागरिक

अति लघुउत्तरीय प्रश्न -

1. भारत में प्रजातंत्र के समक्ष कौन-कौन सी प्रमुख चुनौतियाँ हैं?
2. साम्प्रदायिकता से क्या आशय है?
3. मादक या नशीला पदार्थ किसे कहा जाता है।
4. बेरोजगारी से क्या आशय है?
5. अशिक्षा स्वस्थ जनमत में किस प्रकार बाधक है? लिखिए।
6. शहरी बेरोजगारी से आशय लिखिए।
7. सामाजिक असमानता किसे कहते हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. जनसंख्या विस्फोट से क्या आशय है? समझाइए।
2. साम्प्रदायिकता के चार कारण लिखिए।
3. नशे पर प्रतिबन्ध क्यों होना चाहिये? समझाएं।
4. जनसंख्या वृद्धि के चार कारण लिखिए।
5. जनसंख्या वृद्धि को रोकने के उपाय लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. मादक पदार्थों का शरीर पर क्या प्रभाव होता है? लिखिए।
2. भारत में बेरोजगारी दूर करने के उपायों का वर्णन कीजिए।
3. क्षेत्रवाद का राष्ट्रीय एकता पर क्या प्रभाव पड़ता है? लिखिए।
4. आतंकवाद का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है? इसे दूर करने के उपाए लिखिए।
5. भारत में प्रजातंत्र की सफलता में बाधक तत्वों को बतलाते हुए उन्हें दूर करने के उपायों का वर्णन कीजिए।